राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 142
विषअमृत
नागराज

इन्सान, भगवान से यह कभी नहीं कहता कि मेरे लिए जो अच्छा समझो, वैसा ही करना भगवान! बल्कि वह भगवान से वह मांगता है, जो वह खुद समझता है कि उसके लिए अच्छा है। कभी धन, कभी शक्ति, कभी सन्तान और कभी कष्टों से मुक्ति-

वह यह नहीं समझ पाता कि शायद उसको मिल रहे कष्ट उस खुशी से ज्यादा अच्छे हैं, जो वह भगवान से मांग रहा है। हो सकता है कि वह सन्तान मांगे जो बड़े होने पर उसी को घर से निकाल दे। धन मांगे और उस कारण लुटेरे उसकी हत्या कर बैठें। कभी-कभी विष, अमृत से ज्यादा फलदायी सिद्ध होता है, और कभी अमृत विष से-

आज नागराज के सामने भी ऐसी ही एक दो मुंही स्थिति आ खड़ी हुई है। वह समझ नहीं पा रहा है कि वह कौन सा रास्ता चुने! किसको स्वीकार करे और किसको अस्वीकार! क्योंकि उसके सामने हैं-

विष अमृत

कथा : जॉली सिन्हा
चित्र : अनुपम सिन्हा
इंकिंग : विनोद, आत्माराम
सुलेख व रंग : सुनील पाण्डेय
सम्पादक : मनीष गुप्ता

©RAJ POCKET BOOKS

महानगर की सीमा पर स्थित इस 'चिल्ड्रेंस पार्क' को महानगर महापालिका ने खास तौर पर उन लोगों के लिए डेवलप किया है, जो शहर के प्रदूषण और तनाव से दूर एक शांत दिन बिताने आते हैं–
पापा, कैच!
ओ, रोहित! मुझे दो न?
ओ, रोहित! संभल कर!
ये दोनों रोहित और शिल्पा तो बस! न जाने कितनी एनर्जी भरी है दोनों में! मैं तो देखकर ही थक जाती हूं!
पर नजर न लगे, मेरे बच्चे पढ़ने में भी उतने ही तेज हैं जितने खेलने में!
हां! पर एक खराबी भी है! किसी चीज से डरते ही नहीं हैं!
भगवान उस चीज का आविष्कार कब करेगा, जिससे मैं बच्चों को डरा कर कुछ बातें मनवा सकूं!
अरे, डरें उनके दुश्मन पर हां, तुम तो एक चीज से डरते हो! मुझे पता है!
मैं? मैं डरता हूं! किससे? बताओ तो जरा!
मुझसे! ही ही ही ही ही!
डरते हो न?
ओ शिल्पा! पापा ने तो बॉल को ऐसा 'कट' मारा कि
अब क्या करें? पापा को बताया तो कहेंगे कि जाने दो! छोड़ दो! छोड़ देंगे तो फिर हम यहां पर क्या करेंगे? घास के तिनके गिनेंगे क्या?
अरे, नहीं! ऐसे तो सारी पिकनिक का सत्यानाश हो जाएगा! आ, बॉल निकालते हैं!

कुछ ही मिनटों बाद दोनों
निकालने की कोशिश कर रहे थे-
मुझे पकड़े रहना रोहित! मैंने अभी थोड़ा-थोड़ा तैरना ही सीखा है। अगर फिर डूब गई तो तेरा स्विमिंग कोर्स अधूरा रह जाएगा!
घबरा मत! अगर हाथ छूटा तो तेरे बाल पकड़ लूंगा!
बच्चों की कोशिशें अभी जारी ही थीं-
कि तभी चिल्ड्रेन पार्क का वातावरण एक भयंकर गुर्राहट से गूंज उठा-
यह कैसी आवाज है?
किसी जानवर की गुर्राहट है!
जंगली जानवर की आवाज लगती है, पर इस पार्क के आस-पास तो कोई चिड़ियाघर तक नहीं है। फिर ये आवाज कैसी है?
ज्यादा अंदाजा लगाने की जरूरत नहीं पड़ी-
क्योंकि जल्दी ही गुर्राहट भरने वाले गले का मालिक नजर आने लगा था-
भागो!
भागो!
गुरिल्ला! यह तो असली गुरिल्ला लग रहा है?
गुरिल्ला यहां पर कहां से आएगा? यहां पर न तो कोई सर्कस है, और न ही चिड़ियाघर।
यह जरूर कोई आदमी है, जो गुरिल्ले की ड्रेस पहन कर मजाक कर रहा है!
यह मजाक नहीं है। कोई आदमी दस फुट का होता है क्या? बच्चों को ढूंढो और भागो!
रोहित! शिल्पा!
पार्क में भगदड़ मचनी शुरू हो चुकी थी-

और खतरे का अहसास रोहित और शिल्पा को भी हो रहा था–
कुछ गड़बड़ है, शिल्पा! ये बतखें उस गुरिल्ला से डर रही हैं! ओऽऽऽ ह!
रोहित का हाथ अपने हाथ से छूटते ही शिल्पा पानी में आ गिरी–
रोहित! तेज भी! झील बहुत गहरी है!
न... मैं इसमें तैर नहीं पा रही हूं!
ओ माई गॉड! ओ माई गॉड! तैरना तो मुझे भी नहीं आता?
और आस पास ऐसी कोई चीज भी नहीं दिख रही है जिसे फेंककर मैं शिल्पा को बाहर खींच लूं!
रोहित सोच में डूबा ही हुआ था–
कि शिल्पा एक बार फिर चीख उठी–
रोहित तुम्हारे पीछे! वही... (खक) गुरिल्ला गुर्रा रहा होगा! सब भाग रहे हैं रोहित! तुम भी भाग आओ! अइया! (खक) मुझे छोड़... छोड़ दो!
न... मैं तैरकर निकल आऊंगी!
मेरी जान बचाने के लिए कुछ मत बोल पड़ना! या तो दोनों बचेंगे या दोनों ही डूब मरेंगे! पर मैं तुझे बचाऊंगा! तूने राखी बांधकर कई बार मुझसे रक्षा का वचन लिया है! मैं राखी की डोरी को टूटने नहीं दूंगा! नहीं टूटने दूंगा!
गुरिल्ला पास आता जा रहा था, और रोहित पागलों की तरह अपने कपड़े फाड़ता जा रहा था–
चियाऽऽऽऽ
और उसके साथ बिजली की तरह उन चीथड़ों में गांठें बांधते जा रहे थे–

और फिर- चीथड़ों की बनी वह रस्सी, शिल्पा की तरफ उछल गई-
इसे पकड़ शिल्पा! मैं तुझे खींचता हूं!
और गुरिल्ले के पास आने तक रोहित ने शिल्पा को पानी से तो निकाल लिया था-
पर तब तक सामने भी निकल आया था-
रोहित! यह तो एकदम पास आ गया है! हम भाग भी नहीं सकते! अब क्या करें?
रोहित और शिल्पा को कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ी। क्योंकि तभी-
मेरे बच्चों से दूर हट, शैतान!
इस वार ने गुरिल्ले का ध्यान बच्चों पर से हटाकर-
बच्चों के पापा पर ला खींचा-
और गुरिल्ले की एक सांस से पिताजी पर एक खतरनाक असर नजर आने लगा-
रोहित, पापा को क्या हो रहा है?
इसकी सांस जहरीली लगती है शिल्पा! मुझे पापा को इसके चंगुल से छुड़ाना होगा!
कुछ ही पलों बाद रोहित, गुरिल्ले की गर्दन पर चढ़ा हुआ था-
हम लोग इस दैत्य से जीत नहीं पाएंगे!
इस दैत्य से अगर कोई निपट सकता है तो सिर्फ... नागराज!
नागराज! नागराज!

हवा में ध्वनि तरंगें फैलते ही महानगर में जगह-जगह फैले नागराज के जासूस सर्पों में से एक सर्प, उन तरंगों को महसूस करने लगा-
फन, जंगले से टकराने लगा-
और उसमें से नागलिक संकेत निकल कर...
--एक सर्प से दूसरे सर्प तक पहुंचते हुए--
महानगर में एक तरफ बढ़ने लगे-
इधर चिल्ड्रेंस पार्क में बुरी तरह से उत्तेजित हो चुके गुरिल्ले ने रोहित को उसकी मौत की तरफ उछाल दिया था-
आऽऽऽह!
परन्तु मौत और रोहित के बीच में जीवन की डोर आ खिंची-
महानगर के साथ-साथ पूरी दुनिया में फैली यह कहावत गलत नहीं थी कि 'मौत और नागराज' के बीच की दौड़ में जीत हमेशा नागराज की ही होती है-
मैं बिल्कुल सही समय पर यहां पहुंचा हूं। पर यह गुरिल्ला इस पार्क में कैसे आ गया? अपने आप या किसी ने जान-बूझकर इसको यहां पर छोड़ा है? और ये है कहां का? सर्कस का, चिड़ियाघर का या जंगल का!

खैर, जो भी हो, फिलहाल तो मुझे इसको जल्दी से जल्दी अपने शिकंजे में कस लेना है,
मेरी सर्प रस्सी के शिकंजे इसको पकड़ने के लिए पर्याप्त रहेंगे!
वरना यह जो बरबादी फैला रहा है उसका अन्दाजा लगाना भी मुश्किल है!
नागराज ने मुसीबत को मामूली समझा था, और यह उसकी भूल थी-
क्योंकि नागरस्सी ने गुरिल्ले को जकड़ा तो जरूर, पर जकड़े रख पाने में असफल हो गई-
और नागराज के शरीर पर दो मोटी मजबूत और बालों से भरी बांहें आ कसीं-
आऽऽऽ ह! मेरा... दम घुट रहा है। पसलियां कड़क रही हैं। शिकंजा आश्चर्यजनक रूप से मजबूत है...
-मुझे इस पर विष फुंकार का प्रयोग करके इसको बेहोश करना होगा!
नागराज ने विष फुंकार का प्रयोग तो अवश्य किया, पर गुरिल्ले को चकित करने के बजाय-
उसे खुद चकित हो जाना पड़ा-
ओ! विष फुंकार बेअसर रही! एक गुरिल्ले पर? यह कैसे हो सकता है! असंभव! जरूर कुछ और ही है, इतना सीधा-सादा नहीं जितना कि मैं समझ रहा हूं!

इसलिए अब मैं इस पर ऐसा भीषण वार करूंगा कि इसकी हड्डियों में दरारें पड़ जाएं!
आअह!
पर अभी गुरिल्ले के बेहोश होने का समय नहीं आया था-
...आअह! अब कुछ चैन पड़ा!

...या यह विष सामान्य मानवों को नुकसान पहुंचा सकता है। अरे! यह गुरिल्ला मेरे पीछे झील में नहीं आ रहा है!...
...ओह! मैं तो भूल ही गया था कि गुरिल्ले पानी से डरते हैं, क्योंकि ये अच्छे तैराक नहीं होते हैं!
यह तो इसे पकड़ने का बहुत आसान सा तरीका मिल गया...
नागरस्सी के एक ही झटके से गुरिल्ला, झील में आ गिरा—
गुरिल्ला छटपटाया और डर तथा दम घुटने से बेहोश हो गया, परन्तु नागराज ने उसे डूबने नहीं दिया —
चलो! यह मुसीबत तो टली अब सिर्फ यह पता करना है कि ये कहां से...
...आया थाऽऽऽऽऽ हं!
नागराज को अपने सवालों का जवाब जल्दी ही मिल जाना था—

क्योंकि उसे एक नहीं, बल्कि कई 'कलू' मिल गए थे-
हे देव कालजयी, मैं ने सिर्फ गुरिल्ले को हराकर समझ रहा था कि मुसीबत टल गई है पर यहां तो पूरा जंगल ही जमा हो गया है.. और मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि ये सबके सब गुरिल्ले की तरह ही जहरीले होंगे
मुझे बहुत जल्दी कोई ऐसा रास्ता सोचना होगा, जो इन सबको एक साथ निबटा सके, वरना अगर एक-एक से लड़ना पड़ा तो दूसरा मेरे चीथड़े अवश्य कर देगा.

लेकिन तीन तरफ से घिरे नागराज को सोचने का मौका नहीं मिला-
हाथी मुझे उछाल उछालकर मारना चाहता है, और गैंडा मुझे कुचलकर और इन दोनों से एक साथ निपटने का तरीका मुझे समझ में आ रहा है
अगले ही पल नागराज उछलकर गैंडे की पीठ पर सवार हो गया था-
और अब गैंडे को नागराज नीचे ही दिख रहा था,
और जैसे हाथी नागराज को रौंदने के लिए आगे बढ़ता जा रहा था, वैसे ही गैंडा नागराज को कुचलने के लिए आगे लपकता जा रहा था-
मुझे इनकी जहरीली सांस से बचे रहना होगा बाकी कोई खतरा नहीं है!

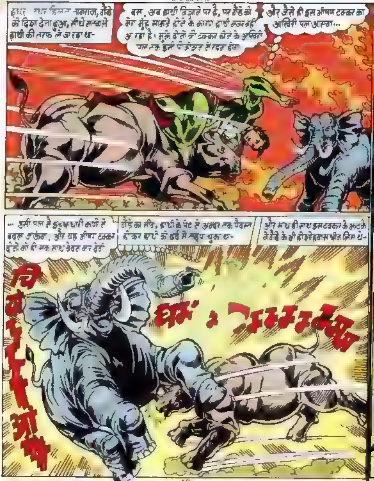
और जैसे ही इस भीषण टक्कर का आखिरी पल आया...

सबसे ज्यादा खतरनाक है.
ओह, आइडिया आ गया.
नागराज की
और उसी
पल शेर ने उस पर वह घातक छलांग लगा दी-

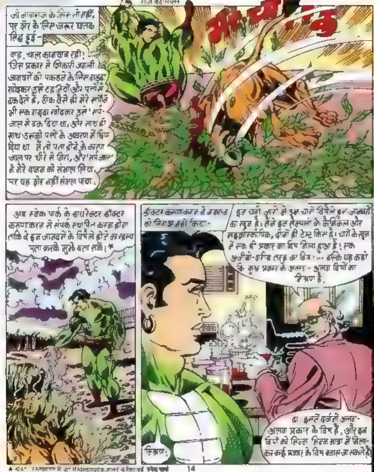
जो नागराज के लिए तो नहीं, पर शेर के लिए जरूर घातक सिद्ध हुई -
वाह, चाल कामयाब रही! जिस प्रकार से शिकारी जंगली जानवरों को पकड़ने के लिए गड्ढा खोदकर उसे टहनियों और पत्तों से ढक देते हैं, ठीक वैसे ही मेरे सर्पों ने भी एक गड्ढा खोदकर उसे 'सर्प-जाल' से ढक दिया था, और साथ ही साथ उसको पत्तों के आवरण में छिपा दिया था। मैं तो पता होने के कारण जाल पर धीरे से गिरा, और 'सर्प जाल' ने मेरे वजन को संभाल लिया, पर यह शेर नहीं संभल पाया।
अब स्नेक पार्क के डायरेक्टर डॉक्टर करुणाकरन से संपर्क स्थापित करना होगा ताकि वे इन जानवरों के विषैले होने का रहस्य पता करके मुझे बता सकें।★
डॉक्टर करुणाकरन ने नागराज को निराश नहीं किया -
इन चारों जारों में इन चारों विषैले हुए जानवरों का खून है। मैंने इन सैम्पलों के केमिकल और माइक्रोस्कोपिक, दोनों ही टेस्ट किए हैं। चारों के खून में एक ही प्रकार का विष मिला हुआ है! एक अजीबो-गरीब तरह का विष ... बल्कि यह कहो कि कुछ प्रकार के अलग-अलग विषों का मिश्रण है।
मिश्रण!
हां, इसमें दर्जनों अलग-अलग प्रकार के विष हैं, और इन विषों को भिन्न-भिन्न मात्रा में मिलाकर कई प्रकार के विष बनाए जा सकते हैं।

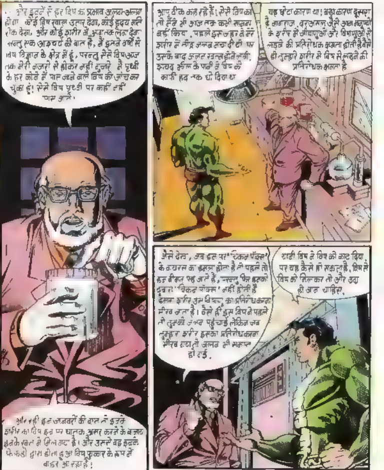
...और इनमें से हर विष का प्रभाव अलग-अलग होगा, कोई विष खाल उतार देगा, कोई हृदय गति रोक देगा, और कोई शरीर में आग तक लगा देगा परन्तु एक आश्चर्य की बात है, मैं इतने वर्षों से विष विज्ञान के क्षेत्र में हूं, परन्तु ऐसे विष आज तक मेरी नजरों से होकर नहीं गुजरे, मैं पृथ्वी के हर कोने में पाए जाने वाले विष की जांच कर चुका हूं! ऐसे विष पृथ्वी पर कहीं नहीं पाए जाते।
आप ठीक कह रहे हैं! ऐसे विष का तो मैंने भी आज तक कभी सामना नहीं किया, पहले इन जहरों ने मेरे शरीर में तीव्र जलन मचा दी थी, पर उसके बाद जलन खत्म होने लगी, शायद झील के पानी ने विष को काफी हद तक धो दिया था
यह छोटा कारण था; बड़ा कारण दूसरा है नागराज, दरअसल जैसे आम मनुष्यों के शरीर में जीवाणुओं और विषाणुओं से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता होती है वैसे ही तुम्हारे शरीर में विष से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता है
और यही इन जानवरों की बात है इनके शरीर का विष इन पर घातक असर करने के बजाए इनके रक्त में मिल गया है। और उसमें वह इनके फेफड़ों द्वारा होता हुआ विष फुफकार के रूप में बाहर आ रहा है!
जैसे देखो, जब इन पर "चिकन पॉक्स" के वायरस का हमला होता है तो पहले तो वह बीमार पड़ जाते हैं, परन्तु फिर इनको दुबारा "चिकन पॉक्स" नहीं होती है क्योंकि शरीर उस वायरस का प्रतिरोध करना सीख जाता है। वैसे ही इस विष ने पहले तो तुमको जलन पहुंचाई लेकिन जब तुम्हारा शरीर इसका प्रतिरोध करना सीख गया तो जलन भी समाप्त हो गई।
यानी विष ने विष को काट दिया, पर यह कैसे हो सकता है, विष से विष को मिलकर तो और उग्र हो जाना चाहिए।

इस वक्त मुझे जानकारी चाहिए। और जानकारी पाने का सबसे अच्छा स्थान है...
भारती कम्युनिकेशंस!
ओह नागराज! आज राज के बजाय तुम आ गए! जरूर कोई खास बात है! क्या गड़बड़ हो गई है?
नागराज ने भारती को सारा विवरण सुनाया तो भारती—
ओह, मगर ये देखो नागराज! इस वक्त महानगर में सिर्फ एक सर्कस लगा है और वह चिल्ड्रेन्स पार्क में कम से कम पचास किलोमीटर दूर है, वहां सब ठीक-ठाक है!
महानगर ज़ू से किसी भी जानवर के भागने की खबर नहीं आई है। और महानगर में पचास किलोमीटर के दायरे में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां से ये जानवर आ सकें
पचास किलोमीटर के बाहर के दायरे के बारे में क्या ख्याल है भारती? यह क्या है? ग्रीन बेल्ट?
ये... ओ... ये सुभाष नेशनल पार्क है, वहीं जहां पर जानवरों को जंगल सा माहौल देकर प्राकृतिक तरीके से बढ़ने को छोड़ दिया जाता है।

... पर मुझे पूरा यकीन है कि ये जानवर नेशनल पार्क से ही आए हैं
वह पार्क महानगर की सीमा पर स्थित है;
मुझे बस एक ही चिन्ता है,
क्योंकि उसका ख्याल भी सही था, और वह उसी स्थान पर ही जा रहा था—
नागराज को महानगर की चिंता छोड़कर अपनी चिंता करनी चाहिए थी—

मीटर की दूरी पार करके सुभाष
पहले बता
कि तू कौन है ? मेरे द्वारा
के पहरेदार तो मेरा विष सूंघते ही
और वहां
पहुंचकर उसे आश्चर्य
पर विष लहरी फैली हुई थी ..
यह विषलहरिया फैली
किसने फैलाया है
मैंने
किंतु कौन
है ?
फैलाती हूं और

मुझे जीवित चीजों से सख्त नफरत है इधर-उधर हिलती-डुलती रहती हैं मेरा ध्यान भंग करती हैं इसीलिए हर जीवित वस्तु या प्राणी को मार देती हूं
और मैं ऐसा करने की सोचने वालों के ही हिलने डुलने में रोड़ा अटका देता हूं जीवन ईश्वर की देन है, उसे मिटाने वाली तू कौन होती है?
आऽऽह, तू तो बड़ा विषैला है रे, मेरे सर तक को चकरा दिया विष के सर को कहते हैं ऐसा विष तो मुझे ब्रह्मांड के किसी कोने में नहीं मिला है
मेरा दिल तेरे विष पर आ गया है, नागराज, मुझे अपना सारा विष दे दे। मैं इसका प्रयोग किसी और ग्रह पर जाकर करूंगी।
ffffsss
ffffsss
मेरा शरीर कोई दुकान नहीं है, 'विष', और न ही मेरे रूप उस दुकान पर बिकने वाली चीज हैं मेरा विष प्रकृति के कल्याण के लिए प्रयुक्त होता है, उसके विनाश के लिए नहीं...
...हां! जो प्रकृति के विनाश पर उतर आते हैं। यह उनका विनाश अवश्य कर देता है।
फ़र्रर्र
नागराज की विष फुहार ने 'विष' पर वही असर किया जो 'विष' के जहर ने नागराज पर किया।
ऊँऽऽह, मेरे शरीर में तेज जलन हो रही है। झुलस रहा है मेरा शरीर।

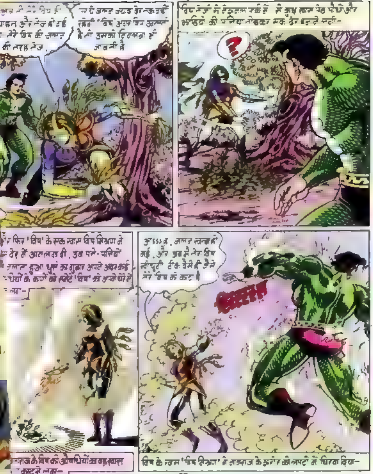
जानती है
'विष' के
ढेर में
धुएं का गुबार
उफ्फ
विष के

...और इस जलते शरीर से ... सर्प बाहर आने की चेष्टा करेगा,
इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके देखता हूं
शायद उससे यह लपटें मेरा पीछा छोड़ दें
लेकिन इच्छाधारी रूप में भी लपटें नागराज को लपेटे रहीं-
ओह! कोई फायदा नहीं हुआ।

कड़ियों की आड़ में नष्क गया-
'विष' बात को बढ़ा चढ़ाकर नहीं कह रही थी!
-किन 'विष' को नागराज का पूरा
जहर चूसने का मौका नहीं मिला-
जहर नहीं चूस पाऊंगी.
उधर जा रहा है.

... मेरी केंचुली है, जैसे ही मुझे ध्यान आया कि मेरी खाल झुलस रही है, तभी मुझे यह भी ध्यान आया कि मैं खाल उतार सकता हूं, असली केंचुली के रूप में तुम्हारी विष अग्नि अभी मेरे शरीर के अन्दर तक नहीं पहुंची थी, इसलिए मैंने अपनी झुलसी खाल को उतार दिया और आजाद हो गया
तेरी शक्तियों को मैंने कम करके आंका था, पर अब मैं सीधे तेरा खून ही निचोडूंगी, बस एक बार इन कंटीदार सर्पों से आजाद हो जाऊं।
इससे तू कभी आजाद नहीं हो सकती विष, ये वे मामूली सांप नहीं हैं जो तेरे विष से गल जाएं।
मेरे पास विषों के सैकड़ों मिश्रण हैं, नागराज, किसी न किसी मिश्रण से तो ये गलेंगे ही गलेंगे!
इन्हें गलने मैं मौका नहीं दूंगा, विष
... मेरे सर्प तेरे पैरों के नीचे एक गड्ढा खोद चुके हैं, एक बार तू जमीन में धंस जाए, फिर देखते हैं कि तू अपने विष मिश्रणों का प्रयोग कैसे करती है।
आह्ह... हा, इस कैद से मैं अभी आजाद... अरे! ...
... जमीन धंसती जा रही है, मेरे पैरों पर सांप जाल बिछा रहे हैं, मेरे विष का असर खत्म हो रहा है, बचाओ नागराज, मुझे छोड़ दे, नागराज जाने दे मुझे, जाने दे।
कोई नहीं, विष मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं, बल्कि जमीन में तब तक गाड़े रखूंगा जब तक तू बेदम नहीं हो जाती
यह अचानक इसे क्या हो गया? और इसके विष का असर समाप्त कैसे होने लगा? कुछ गड़बड़ लगती है?
नागराज ने गड्ढे का मुंह बन्द करना शुरू कर दिया

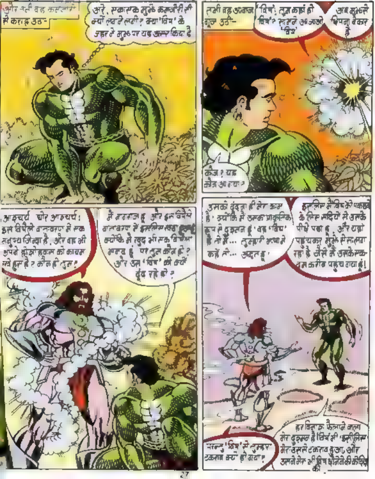
से कराह उठा-
अरे, एकाएक मुझे कमजोरी सी क्यों लगने लगी? क्या 'विष' के जहर ने मुझ पर यह असर किया है
तभी वह आवाज गूंज उठी-
'विष', तुम कहां हो 'विष'? सामने आ जाओ 'विष'
आज मुझसे छिपना बेकार है
कौन? यह कौन आ गया?
आश्चर्य घोर आश्चर्य! इस विषैले वातावरण में एक मनुष्य जिन्दा है, और वह भी अपने होशो हवास को कायम रखे हुए है? कौन हो तुम?
क्योंकि मैं खुद भी एक विषैला
पर तुम कौन हो? और उस 'विष' को क्यों ढूंढ रहे हो?
उसको ढूंढना ही मेरा काम है, क्योंकि मैं उसका प्राकृतिक रूप से दुश्मन हूं। वह 'विष' है तो मैं... तुम्हारी भाषा में कहें तो... अमृत हूं।
इसलिए मैं विष को पकड़ने के लिए सदियों से उसके पीछे पड़ा हूं, और यहां पहुंचकर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं उसके एकदम करीब पहुंच गया हूं।
परन्तु 'विष' से तुम्हारा टकराव क्यों हो गया?
हर विनाश फैलाने वाला मेरा दुश्मन है।
उससे टकराव हुआ, और उसने मेरा भी विष चूसने की कोशिश की

तुम्हारा 'विष' चुराने की कोशिश की? यानी अतिरिक्त विष प्राप्त करने की चेष्टा की, पर ये तो नियमों के खिलाफ है.
नियम? कैसे नियम? तुम किन नियमों की बात कर रहे हो?
मेरा तात्पर्य है कि विष जैसे विनाशकों के भी कुछ नियम होते हैं, ऐसा उसने अनजाने में नहीं किया था...
... खैर, जल्दी बताओ कि विष कहां है? उसका वह अंडे जैसा विनाश जैसा है!
अब वह कभी विनाश नहीं फैला पायेगी, अमृत. क्योंकि मैंने उसकी यहीं पर कब्र बना दी है.
कब्र? कब्र क्या? अच्छा, जमीन में दबी है: खोदो, जल्दी खोदो दिखाओ मुझे उसकी लाश दिखाओ.
नागराज के सर्पों ने जमीन को फिर से खोदना शुरू कर दिया-
और गड्ढे के फिर से खुदते ही नागराज और अमृत दोनों ही चकित रह गए-
अरे! यहां पर तो गड्ढे के बजाय सुरंग बनी हुई है
मैं जानता था यह जमीन कैद विष को पकड़े नहीं रख सकती. वह अपने 'विष सिग्नल' से जमीन को गलाकर सुरंग बनाती हुई यहां से दूर जा चुकी है.
यह सुरंग 'विष' की ढूंढ़ाई दूढ़ता है, और तुम्हारे लक्ष्य के अनुसार चौबीस घंटे के अन्दर-अन्दर उसे ढूंढ़ निकालना है...
चौबीस घंटे के अन्दर! ऐसी समय सीमा क्यों है अमृत?
यह लड़की बहुत मुश्किलें है नागराज
बस, तुम यह समझ लो कि अगर पृथ्वी को विष के विनाश से बचाना चाहते हो तो विष को ढूंढ़ने में मेरी मदद करो

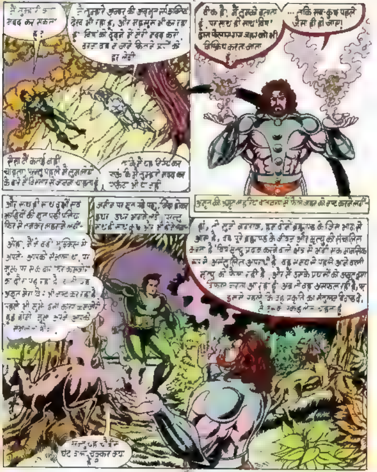
…ताकि सब-कुछ पहले जैसा ही हो जाए!

जब तक मुझे सच का पता न
तुम चुप क्यों हो नागराज? जल्दी बोलो! मदद करोगे या नहीं?
इसके पास समय बहुत कम है.
..उसे मैं पूरा कर देता हूं. मैं इस बात पर हैरान था कि मेरी अमृत लहरियां तुझे कमजोर कर रही थीं
आह्ह्ह!

अ….हँ,
…अब तू मेरा गुलाम है
…जैसे ये वृक्ष ; मेरा अमृत पीकर इसमें अतिरिक्त 'जीवन शक्ति' भर जायगी। और फिर इसकी जड़ें ढूंढेगी विष को , चाहे 'विष' यहां से दो कदम दूर हो या दो हजार योजन ,
पेड़ की जड़ें आश्चर्यजनक रूप से बढ़कर विष की दिशा में ऐसे लपकीं जैसे कुत्ता गंध सूंघकर अपराधी को कई दिन बाद भी ढूंढ निकालता है -
और साथ ही साथ अमृत भी चल दिया है वह स्थान-
आगाज के मरने के लिए छोड़कर-
अ…ह, मेरा विष तेजी से नष्ट हो रहा है , और इस 'अमृत' से बचने का मेरे पास कोई उपाय नहीं है ; अब मैं यहीं पर दम तोड़ दूंगा, और उधर 'विष और अमृत' के टकराव में न जाने कितनी तबाही फैलेगी, और न जाने कितनी जानें जायेंगी , …
…पर मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा , जब मैं अपने-आपको ही नहीं बचा पा रहा हूं , तो दूसरों को क्या बचाऊंगा ; दूसरे विष को तो मैं अपने विष से काटने का प्रयास कर सकता हूं
क्योंकि लोहे को लोहा ही काटता है , पर अमृत को कैसे … अरे ,

लोहा, लोहे को काटता है! विष को विष के दूसरे रूप से काटा जा सकता है तो अमृत यानी विष के काट को भी, विष के काट से काटा जा सकता है. और वह काट मेरे पास है उस एंटी-वेनम के रूप में, जो डॉक्टर करुणाकरन ने मुझे दी थी ..
... पर इसका असर उल्टा भी हो सकता है. हो सकता है कि जैसे कहीं-कहीं विष, विष से मिलकर और ज्यादा उलटा है, वैसे ही कहीं मेरे विष की काट मेरे शरीर में बह रहे अमृत के असर को और तेज करके मेरी मौत को और शीघ्र न बुला ले ...
... पर और कोई रास्ता नहीं है. मौत धीरे आए या तेज, आनी तो है ही; बच सकने का सिर्फ यही एक रास्ता है. बस अब देव कालजयी से यही प्रार्थना है कि मेरे विष की काट अमृत के असर को नष्ट कर सके.
नागराज एक सांस में पूरा एंटीवेनम पी गया—
और उसके सारे शरीर की नसें धीरे-धीरे सख्त होने लगीं. सांसें भारी हो उठीं, हाथ-पैर शिथिल हो गए, आँखें अपने-आप मुंदने लगीं और दिल की धड़कन अपना दम तोड़ने लगी—
शायद 'एंटीवेनम' अपना वही असर दिखा रहा था, जिसका नागराज को डर था. मौत के आने की गति और तेज हो गई थी—

को शिकार करने के लिए पूरा जंगल मिल गया था–
महानगर का इमारती जंगल
आहा! यहां पर मुझे विनाश फैलाने के लिए बहुत सारी चीजें मिलेंगी। वाह वाह विनाश ही विनाश
लोग भागे, कुछ भागे, कुछ मुसीबत से गुजर गए, और कुछ दुनिया से ही गुजर गए–
का रूप और उसके प्रकट होने का तरीका लोगों को भयभीत कर देने के लिए काफी था
भारती चैनेल द्वारा ऊंची इमारतों पर स्थित कैमरों से इस हादसे का सीधा प्रसारण देख रहे थे
क्या मुसीबत आ गई
अब क्या करूं?
हां, भारती, मैं भी इस हादसे को देख रहा हूं... पर नागराज अभी तक कहीं नजर नहीं आ रहा है! वह जहरीले जानवरों की तलाश में सुभाष नेशनल पार्क गया था? अच्छा ठीक है भारती, मैं कुछ करता हूं।...

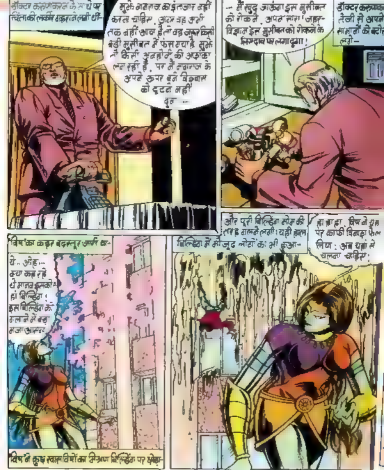
डॉक्टर कल्याणकरन के माथे पर चिंता की लकीरें गहराने लगी थीं–
मुझे नागराज का इंतजार नहीं करना चाहिए. अगर वह अभी तक नहीं आया है तो वह जरूर किसी बड़ी मुसीबत में फंस गया है. मुझे तो किसी अनहोनी की आशंका लग रही है. पर मैं नागराज के अपने ऊपर बने विश्वास को टूटने नहीं दूंगा...
...मैं खुद जाऊंगा इस मुसीबत को रोकने. अपना सारा 'जहर-विज्ञान' इस मुसीबत को रोकने के लिए दांव पर लगा दूंगा!
डॉक्टर कल्याणकरन तेजी से अपने सामानों को बटोरने लगे–
विष का कहर बदस्तूर जारी था–
ये.. ओह... क्या कह रहे थे मानव इसको? हां बिल्डिंग! इस बिल्डिंग को गलाने में बड़ा मजा आएगा!
विष ने कुछ खास विषों का मिश्रण बिल्डिंग पर फेंका–
और पूरी बिल्डिंग मोम की तरह गलने लगी। यही हाल बिल्डिंग में मौजूद लोगों का भी हुआ–
हा हा हा. विष ने इन पर काफी विनाश फैला लिया. अब यहां से चलना चाहिए!

क्योंकि अब ... को यहां पर आने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा, इस वक्त मैं उसके सामने गई तो मुझे मात खानी पड़ेगी, इस ... क्या नाम ... विस्किंग को बुलाने में मेरा काफी जहर खर्च हो चुका है! अब चलकर जरा सा आराम किया जाए, ताकि मैं तरोताजा भी हो जाऊं, और मेरे खत्म हुए कुछ विष फिर से मेरे शरीर में पैदा हो जाएं!
अगर तू सच कह रही है, तब तो मैं एकदम ठीक समय पर यहां आया हूं...
कौन?
... करुणाकरन! और मैं तेरे लिए तैयारी करके आया हूं, अगर तूने ही उन जानवरों के अंदर जहर भरा होगा, और इससे मुझे यह पता चल चुका है कि तू जहरों का मिश्रण होती है,
इसीलिए मैं यह 'वेनम एनालाइजर' लेकर आया हूं! यह तेरी विष फुहार का तुरन्त विश्लेषण करके उसके लिए जहर की काटों का मिश्रण बना देगा, पर यह बाद की बात है, पहले तो मैं तुझे विष फेंकने का मौका ही नहीं दूंगा
आऽऽऽह!
आऽऽऽह! इस विष काट ने तो मेरे बचे-खुचे विष को भी नष्ट करना शुरू कर दिया है और बगैर विष के तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा, कुछ करना होगा, वरना या तो मैं पहले मर जाऊंगी या अमृत आकर मेरा खेल खत्म कर देगा!
हे भुजंगदेव, ये किस ग्रह पर रहने के लिए आ गई मैं?

तू मुझे जरूरत से ज्यादा कमजोर समझ रहा है कल्पाकल! मेरे पास अभी भी इतना विष है कि तुझे गलाकर पानी बना दूं.
तुमकी औरत नहीं असली विष! तेरे मुंह या शरीर से विष की फुहार निकलने ही मेरा 'वेनम एनलाइजर' उस मिश्रण के घटकों का विश्लेषण करके सदा के लिए...
...और अपने आप उस विष मिश्रण का 'एंटीवेनम मिश्रण' बना कर तेरे विष को काट देगा.
ओह, यह मानव तो मुझ पर भारी पड़ने लगा है.
अगर मेरे शरीर में जल्दी ही विषों की उत्पत्ति न हुई तो इसी राह पर मेरी समाधि बन जाएगी.
लेकिन विष तो धीरे धीरे ही बने... ओह
कुछ देर बाद विष की आंखें चमक उठीं–
कुछ ही पलों बाद विषपिंडल रहीं शिखंड में से अपना विष कपास चुन रही थी–
पहली बार मेरे ही विष से बनी वस्तु ने मेरी जान को बचाया है. अब मेरे शरीर में विषों की मात्रा बढ़ रही है;
?
अब तेरी मौत करीब आ रही है मानव. अब मैं इतनी तेजी से अलग-अलग विष मिश्रणों को बनाकर फेंकूंगी कि तेरा 'एनलाइजर' भ्रमित हो जाएगा!

करुणाकंटर ने इस स्थिति की कल्पना नहीं की थी—
ओह! यह तो सचमुच इतनी तेजी से अलग-अलग मिश्रणों को छोड़ रही है कि मेरे 'न्यूट्रलाइजर' पर उसे विश्लेषित करने में काफी जोर पड़ रहा है!
इसके कंप्यूटराइज्ड सर्किटों में शॉर्ट-सर्किट हो रहा है...
—और अब यही हाल तेरा होगा मलव.
घातक विषों का मिश्रण करुणाकंटर को जलाने के लिए आगे लपक पड़ा—
लेकिन उसको किसी और ने अपने शरीर पर झेल लिया—
नागराज, तुम आ गए? मैं तो समझ रहा था कि तुम...तुम...
जो कहते आपकी जबान लड़खड़ा रही है। वैसा ही होने वाला था डॉक्टर। मैं तो मौत की कगार पर लगभग पहुंच ही चुका था, पर आपके द्वारा दिए गए स्टेटिडोट ने मेरी जान बचा ली!
उस ग्रेट स्टेटिडट ने इस 'विष' के जहर को काट दिया.
'विष' के जहर को नहीं, बल्कि अमृत के जहर की काट को!

अमृत धारी-धारी तू अमृत से भी टकरा चुका है ! और उससे टकराकर भी बच गया ? पर कैसे ? अमृत के पास तो हर विष की काट है। जीवनदायी शक्तियां हैं उसके पास, तू उससे कैसे बच गया? तेरा जहर तो खत्म हो जाना चाहिए था, और तुझे एक आम मानव बन जाना चाहिए था.
और अगर ऐसा हो जाता तो तू मेरे विष वारों से कभी बच नहीं पाता.
अमृत ? यह अमृत कौन है ?
इसको पकड़ने आनेका दावा करनेवाला एक परग्रही। ये दोनों परग्रही हैं। किसी दूसरे ग्रह से आए हैं। अमृत ने मुझसे सहयोग मांगा था। पर उसके इरादे स्पष्ट न होने के कारण मैंने इंकार कर दिया तब उसने अमृत की विषकाट का प्रयोग करके मेरा विष खत्म करने और मुझे मारने की कोशिश की।
मैं समझ गया नागराज, जैसे इस विष के जहर के खिलाफ तुम्हारे शरीर ने प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली थी, वैसे ही उस 'स्टीवेनम' ने अमृत की 'विषकाट' को रोकने के लिए तुम्हारे शरीर में दूसरी प्रतिरोधक क्षमता पैदा करने में मदद की है। अब शायद अमृत की विषकाट तुम पर असर करेगी भी नहीं।
ऐसा क्यों डॉक्टर कल्याकरन ?
बचने का और कोई रास्ता न पाकर मैं आपके द्वारा दिया गया 'स्टीवेनम' पी गया पहले तो मेरे शरीर में जीवन के सभी संकेत शिथिल होने लगे !
पर न जाने कैसे आपके 'अमृत' ने उस अमृत के असर को काट दिया। मैं बच गया.
यह तो गड़बड़ पर गड़बड़ हुई जा रही है पहले किसी ग्रह पर काम करने में दिक्कत नहीं आई थी.
लेकिन यहां पर तो ये नाग मानव बार-बार अड़ंगा डाल रहा है। मेरे विष को भी पचा जा रहा है। और अमृत के अमृत को भी.
देखो, जैसे हमको जीवन में एक बार ही "चिकन पॉक्स" होता है फिर हमारा शरीर हमेशा के लिए उसके खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेता है। वैसा ही इस अमृत के विष के साथ भी होना चाहिए !
खैर अब मैं संभल गई तो यहां से फटाफट निकल लेना चाहिए।

वरना कहीं अमृत मुझे ढूंढता-ढूंढता यहां आ गया तो सब गड़बड़ हो ऽऽऽऽ यह क्या ?
ज़मीन में से पेड़ की जड़ें निकलकर मुझे शिकंजे में कस रही हैं, और इनके शिकंजा कसने से मेरे विष नष्ट होने शुरू हो रहे हैं.
इसका एक ही अर्थ हो सकता है। और वह ये कि ये जड़ें, अमृत द्वारा भेजी गई हैं और अब वह भी इनके पीछे-पीछे यहां आता ही होगा. मुझे इससे आज़ाद होना होगा, होना ही होगा. पर कैसे ? कैसे ? कैसे ?
ये जड़ें सचमुच अमृत ने ही भेजी थीं, यानी अब अमृत और विष का टकराव होने ही वाला है. देखते हैं अब क्या होना है !

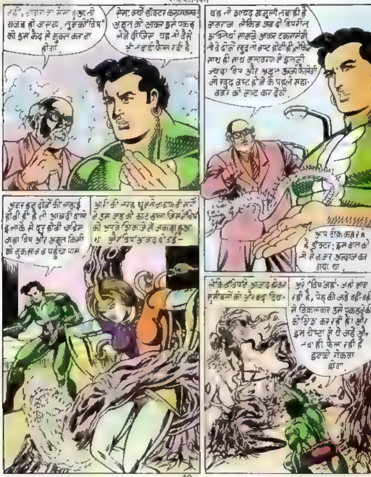
नहीं, ... ऐसा हुआ तो गजब हो जाएगा, तुमको "विष" को इस कैद से मुक्त करना होगा।
ऐसा क्यों डॉक्टर करमचन्द? अमृत को आकर इसे पकड़ लेने दीजिए, यह तो वैसे भी तबाही फैला रही है.
यह तो शायद मामूली तबाही है महाराज, लेकिन जब दो विपरीत शक्तियां सामने आकर टकराएंगी तो वे दोनों खुद तो नष्ट होंगी ही, लेकिन साथ ही साथ वातावरण में इतनी ज्यादा विष और अमृत ऊर्जा फैलेगी जो खुद नष्ट होने के पहले महानगर को नष्ट कर देगी.
आप ठीक कह रहे हैं डॉक्टर; इस बात को तो मैं नजरअन्दाज कर गया था.
अगर इन दोनों की लड़ाई होनी ही है तो आबादी वाले इलाके से दूर होनी चाहिए जहां विष और अमृत किसी को नुकसान न पहुंचा पाएं
आरी की तरह घूमते ... ने उस जड़ को काट डाला जिसने विष को अपने शिकंजे में जकड़ा हुआ था और विष आजाद हो गई-
लेकिन विष ने आजाद होकर ... की ओर बढ़ा दिया-
अरे! "विष" जहां जहां भाग रही है, पेड़ की जड़ें वहीं-वहीं से निकलकर उसे पकड़ने की कोशिश कर रही हैं। और इस चेष्टा में ये जड़ें और ज्यादा ही फैल रही हैं इनको रोकना होगा.

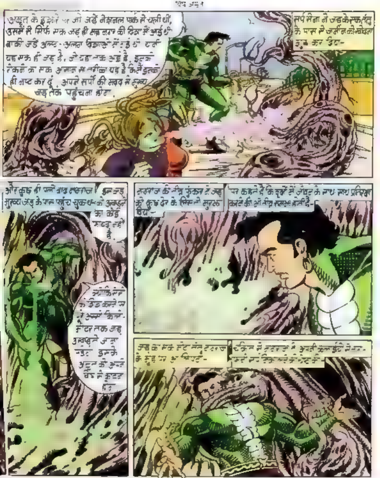

अक्षुत के इशारे पर जो जड़ें नेशनल पार्क से चली थीं,
सर्प सेना ने जड़ के एक तंतु के पास से जमीन को खोदना शुरू कर दिया-
पर लगता है कि वृक्षों में अक्षुत के साथ साथ प्रतिरोध करने की भी तीव्र क्षमता होती है-

लेकिन जड़ के तंतुओं ने नागराज को दबोचकर, साँपों का रास्ता रोक दिया-
ओह! अमृत से इस जड़ में अद्भुत जीवनशक्ति आ गई है। ये मेरे द्वारा किसी भी तरह के वार को रोकने में सक्षम है, जो इसके लिए घातक हो सके। अब ये मेरा दम घोंटना चाहता है
लेकिन मेरा दम घोंटना इतना आसान नहीं है, क्योंकि मैं ऐसे किसी भी शिकंजे से
...इच्छाधारी कणों में बदलकर आसानी से बाहर निकल सकता हूँ! पर यह चाल मुझे तो बचा सकती है, पर इस तंतु-पेड़ को नहीं...
...मेरे जहर का भी इस पर कोई खास असर होता नहीं दिख रहा, क्योंकि इसका आकार अति विशालकाय है
इसको मारने के लिए मुझे अपना पूरा विष खर्च कर देना होगा और ऐसा करना मूर्खता होगी
अब इसके अमृत वाले असर को कैसे काटूं?
नागराज के कुछ सोचने से पहले ही हमला दुबारा शुरू हो गया
ओह,
यह जड़ मेरा पीछा छोड़ने वाली नहीं है। बार-बार इच्छाधारी कणों में बदलकर बचाव करते रहने से मैं बचता रहूँगा, और इसके अन्य तंतु
शायद ही कोई रास्ता सोचना पड़ेगा, जो तेरा विष भी बढ़ा दे और इस विनाशकारी जड़ को नष्ट भी कर सके। इससे पहले तो मैंने 'अमृत' के विषकाट को अपने शरीर के सेटेलाइट्स से... अब मिल गया रास्ता
नागराज अपनी अनियंत्रित नागशक्ति से जड़ को खींचता हुआ एक खास तरफ ले चला -

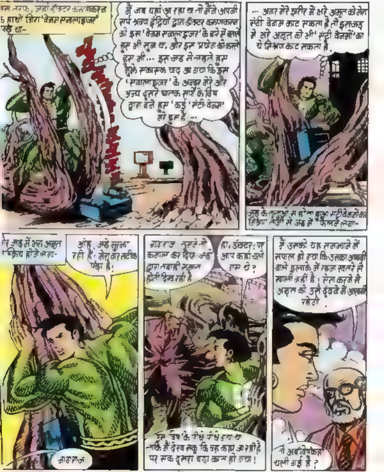
मैं जब यहां आ रहा था तो मैंने अपनी सर्प श्रवण इंद्रियों द्वारा डॉक्टर कल्याकारन को इस 'वेनम स्नालाइजर' के बारे में बातें करते हुए भी सुना था, और इस प्रयोग को करते हुए भी... इस जड़ से लड़ते हुए मुझे एकाएक याद आ गया कि इस 'स्नालाइजर' के अन्दर मेरे और अन्य दूसरे घातक सर्पों के विष द्वारा बने हुए 'कई 'एंटी-वेनम' भरे हुए हैं...
... अगर मेरे शरीर में भरे अमृत को मेरा एंटी-वेनम काट सकता है तो इस जड़ में भरे अमृत को भी 'एंटी वेनमों' का ये मिश्रण काट सकता है।
आंह, जड़ें मुरझा रही हैं। मेरा वार सटीक पड़ा है।
हां, डॉक्टर! पर आप कहां चले गए थे?
मैं उसको यह समझाने में सफल हो गया कि उसका आश्रम वाले इलाके में रहना खतरे से खाली नहीं है। ऐसा करने से अमृत को उसे ढूंढने में आसानी रहेगी।
पर एक दूसरा बड़ा काम हो गया!
तो अमृत कहां चली गई है?

में स्थित पहाड़ियों में चली गई है. अब तुम उसको वहां जाकर पकड़ सकते हो. और
यह बताने के लिए शुक्रिया
... अब 'विष' अमृत से नहीं बच सकेगी
कौन?
अमृत ने यह सब लेकिन अब अमृत का क्या फायदा? अब तो चिड़िया उड़ चुकी है.
चिड़ियों के उड़ने से मुझे डर.
ओह! तुम्हारे कहने का तात्पर्य है कि 'विष' भाग चुकी है! कोई बात नहीं! मैं उसे पहाड़ियों से जरूर ढूंढ निकालूंगा.
'विष' को हरा चुका होता.
इतना आसान नहीं है अमृत. वे पहाड़ियां काफी टेढ़ी-मेढ़ी और ऊंची-नीची हैं.

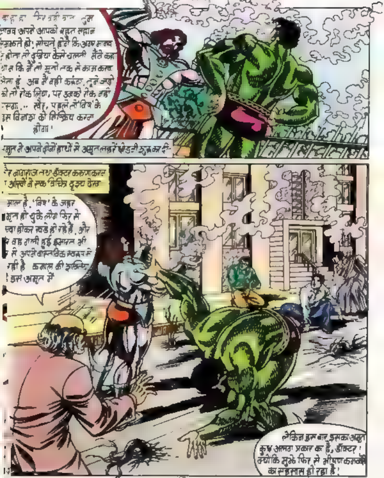
हा हा हा फिर वही बात, तुम
मानव अपने आपको बहुत महान
समझते हो! सोचते होंगे कि अगर मानव
न होता तो दुनिया कैसे चलती! मैंने कह
था न कि मैं तो मुर्दों तक से काम करवा
सकता हूं। अब मैं वही करूंगा, तूने उसे
को तो रोक लिया, पर इनको रोक नहीं
सकेगा ... खैर, पहले तो 'विष' के
इस विनाश को निष्क्रिय करना
होगा!
अमृत ने अपने दोनों हाथों से अमृत लहरें छोड़नी शुरू कर दीं
और नागराज तथा डॉक्टर करुणाकरन
की आंखों ने एक विचित्र दृश्य देखा
मालूम है, 'विष' के जहर
से मृत हो चुके लोग फिर से
जीवित होकर खड़े हो रहे हैं, और
वह गली हुई इमारत भी
फिर से अपने वास्तविक स्वरूप में
आ रही है! कमाल की शक्ति
है इस अमृत में!
लेकिन इस बार इसका असर
कुछ अलग प्रकार का है, डॉक्टर!
क्योंकि मुझे फिर से भीषण कमजोरी
का एहसास हो रहा है!

मैं समझ गया नागराज ! जैसे विष अलग अलग ज़हर मिश्रणों द्वारा अलग-अलग प्रकार की तबाही फैलाती है वैसे ही यह अमृत भी उन विभिन्न मिश्रणों को काटने के लिए अलग अलग प्रकार के अमृत फेंकता होगा. तुम्हारा शरीर पहले वाले अमृत के लिए तो अभी भी प्रतिरोधक क्षमता रखता है। पर यह नया अमृत तुम्हारे ज़हर को फिर काट रहा है।
आऽऽऽह ! यानी मैं जब-जब अमृत द्वारा छोड़ी गई किसी नई अमृत लहरी का सामना करूंगा, तब-तब मुझ पर कमजोरी का दौरा पड़ेगा.
शायद आप ठीक कह रहे हैं! मुझमें फिर से शक्ति आ रही है। लेकिन जब तक मैं कमजोर रहूंगा, उस बीच कोई भी मुझपर हमला करके मेरी जान ले सकता है
ऐसा ही लगता है नागराज। पर यह कमजोरी की स्थिति ज्यादा देर तक नहीं रहेगी. जैसे ही तुम्हारी कोशिकाएं इस अमृत मिश्रण की संरचना पहचान लेंगी, वे अपने-आप प्रतिरोधक रसायन पैदा करना शुरू कर देंगी
तुम्हारे शरीर में ये प्रतिरोधक क्षमता अमृत की 'एंटीवेनम' पीने के कारण पैदा हुई है। तुम्हारी कोशिकाएं उसी के कारण अमृत की भी काट पैदा कर पा रही हैं। हो सकता है कि वह प्रतिरोधक रसायन पैदा करने की गति और तेज कर दे और तुमको कमजोरी और कम देर के लिए महसूस हो।
मैं देव कालजयी से प्रार्थना करता हूं कि ऐसा ही हो! फिलहाल तो मुझमें लगभग पूर्ण शक्ति आ गई है! लेकिन... लेकिन..
.. सारी तबाही फिर से ठीक कर देने के बाद अब अमृत अपनी अमृत तरंगें क्यों फेंक रहा है?
विष को ढूंढने के लिए मदद नहीं कर रहा हूं नागराज। मुर्दों को ज़िंदा कर रहा हूं अब मैं ज़िंदों को अमृत पान करा कर अतिरिक्त जीवन शक्तियां नहीं देना चाहता

अमृत की लहरें महानगर के अलग-अलग हिस्सों की तरफ लपकीं। पहली अमृत लहर महानगर के ... घाट पर अंतिम संस्कार पा रहे एक शव से जा टकराई-
यह क्या है?
और धू-धू करके जल रहे शव में फिर से प्राण दौड़ने लगे-
हे भगवान, ये क्या हो रहा है?
कलियुग है... भगवान का नहीं!
पूरे महानगर में भय और आतंक फैल रहा था।
तेरे, ... है?
... का क्या है?
... सिर्फ एक ... के लिए-

और यह मकसद था-
विष की खोज-
बस! अब विष नहीं बच सकती, सर्पोन्मत्त में घेर लूंगा मैं उसे!
इस बार तेरा सत्य सत काटता नागराज, वरना मैं सिर्फ जीवन देता ही नहीं, छीन भी लेता हूं.
ये जा रहा है! इसका पीछा करो नागराज
नहीं डॉक्टर। ये नो न जाने कहां-कहां भटकेगा! मुझे इससे पहले विष तक पहुंचना है.
फिर तुम क्या करोगे?
अभी तय नहीं किया है, डॉक्टर कल्याणकरन. फिलहाल तो मुझे यह पता लगाना है कि 'सूत्रों' को जिंदा करने से अदृत का क्या तात्पर्य था. मैं अपने जासूस सर्पों से पूरे महानगर की रिपोर्ट लेता हूं.
नागराज, अपने जासूस सर्पों से मानसिक संकेत प्राप्त करने में जुट गया-
और अगले ही पल वह चौंक उठा-
मुझे तुरंत जाना होगा डॉक्टर कल्याणकरन। अदृत ने सचमुच कुछ सूत्रों को जीवित कर दिया है, और वे शायद 'विष' की तलाश में पूरे महानगर में आतंक और तबाही फैला रहे हैं!
नागराज तुरंत एक दिशा में रवाना हो गया-
खतरे के मानसिक संकेत कई स्थानों से आ रहे हैं. मैं किसी एक दिशा में ही जा सकता हूं। मैं फिलहाल उधर ही जाऊंगा, जहां खतरे के सबसे तीव्र संकेत आ रहे हैं.

नगर के इस इलाके में आ रहे थे-
विष इस दिशा से आ रही है उसके ज़हर की गंध ... ह
जलते शव के उस दिशा में बढ़ते कदमों को-
नागराज ने और तेज कर दिया-
मुझे यहां पहुंचने में थोड़ी देर हो गई है पर मैं इसको और तबाही नहीं करने दूंगा
अमृत ने इसको जीवन शक्ति दी है। यानी इसकी अमृतरूपी जीवन शक्ति को मेरा विष काट सकता है।
नागराज ने अपनी तीव्र विष फुंकार 'वार' जलते शव' पर किया
और शव लड़खड़ा उठा-

लेकिन उसने जो असली हरकत की, उसकी नागराज ने उम्मीद नहीं की थी-
आऽऽह! अग्नि फुफकार! अमृत ने इसमें जीवन के अलावा और भी शक्तियां भर दी हैं.
मेरा शरीर जल रहा है और.. और इस फुंकार में मौजूद अमृत मिश्रण के कारण मुझ पर फिर से कमजोरी सी छा रही है.
इस आग को बुझाना होगा. जल्दी से जल्दी.
नागराज ने जमीन पर लोटकर आग बुझाने की कोशिश की-
लेकिन-
ओह! आग तो बुझ नहीं रही है. पर इसको बुझाने का एक और तरीका मेरे पास है. कोई भी आग बगैर ऑक्सीजन के नहीं जल सकती.
मैं अगर अपने आपको अपनी ही विष फुंकार से घेर लूं तो वायु में मौजूद ऑक्सीजन का सम्पर्क मेरे शरीर से टूट जाएगा...
...और आग बुझ जाएगी.
बुझ गई आग, लेकिन इतनी देर में वह अजनबी कहाँ चला गया?
सड़क पर उसके पैरों के निशान! और ये गड्ढे

मुझे इसको रोकना होगा! वरना अगर कहीं इसने 'विष' को ढूंढ निकाला, तो इसके जरिए अमृत तुरन्त ही "विष" तक पहुंच जाएगा, और अगर इस वीराने में भी विष-अमृत का युद्ध हुआ तो महानगर के वासियों पर कुछ न कुछ तो असर आएगा ही।
मुझे इस युद्ध को रोकना होगा, और जब तक संभव हो इस युद्ध को टालने की कोशिश करनी होगी। और इसके लिए विष को अमृत से दूर रखना होगा। अमृत को विष का पता नहीं मिलना चाहिए.
'जलते शव' के पैरों के निशान का पीछा करते नागराज ने-
जल्दी ही 'जलते शव' को फिर से ढूंढ निकाला-
वह रहा . मेरी विष फुंकार एक बार इसको बेदम कर चुकी है तो दुबारा भी जरूर करेगी।
पर इस बार मैं फुंकार तब तक छोड़ता रहूंगा।
... जब तक इसका अमृत पूरी तरह से निष्क्रिय न हो... ओ ! यह क्या ?
अगर अपने ऊपर पड़ी परछाईं से सतर्क होकर नागराज-
तुरन्त इच्छाधारी कणों में बदल नहीं जाता तो उसका शरीर अपने-आप उस चट्टान के नीचे पिसकर चटनी बन जाता --

नागराज के तुफानों में ही तीन पल बीत गए। और वे पल बीतते ही नाग-राज अपने असली स्वरूप में आ गया-
ओह! बाल-बाल बचा, पर ये चट्टान ठीक मुझ पर ही क्यों गिरी?
अगले ही पल नागराज को जवाब मिल गया-
आऽऽऽह, एक और मृत जीवित प्राणी, अब समझा कि ये चट्टान संयोग से मुझ पर नहीं गिरी, बल्कि इसे जान-बूझ कर मेरे ऊपर गिराया गया था
... शायद उस.. जलते मुर्दे को मेरी विष फुंकार से बचाने के लिए-
अचानक नागराज को चुप हो जाना पड़ा! क्योंकि हमला दो तरफ हो गया था-!
ओह! अब 'जलता मुर्दा' भी मुझ पर टूट पड़ा है, पर क्यों? और, कारण बाद में सोचूंगा, पहले तो इन दोनों का इन्तजाम किया जाए।
आसान लगता है, क्योंकि एक मिट्टी निकला है क्योंकि ये शायद कब्र से निकला है और दूसरा शायद चिता से निकला है और आग तथा मिट्टी एक-दूसरे के दुश्मन होते हैं

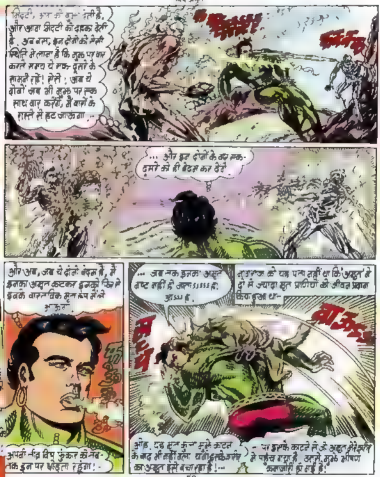
मिट्टी, आग को बुझा देती है, और आग मिट्टी को दहका देती है. अब बस, इन दोनों को ऐसी स्थिति में लाना है कि मुझ पर वार करते समय ये एक-दूसरे के सामने रहें! ऐसे : अब ये दोनों जब भी मुझ पर एक साथ वार करेंगे, मैं वारों के रास्ते से हट जाऊंगा ..
... और इन दोनों के वार एक-दूसरे को ही बेदम कर देंगे.
और अब, जब ये दोनों बेदम हैं, मैं इनका अमृत काटकर इनको फिर से इनके वास्तविक मृत रूप में ले आऊंगा.
अपनी नील विष फुंकार को तब तक इन पर छोड़ता रहूंगा! -
... जब तक इनका अमृत नष्ट नहीं हो जाता ऽऽऽ ह. आऽऽ ह.
नागराज को यह पता नहीं था कि 'अमृत' ने दो से ज्यादा मृत प्राणियों को जीवन प्रदान किया हुआ था-
ओह, यह मृत कुत्ता मुझे काटने के बाद भी नहीं मरा. यानी इसके शरीर का अमृत इसे बचा रहा है!...
... पर इसके काटने से जो अमृत मेरे शरीर में पहुंच गया है, उससे मुझे भीषण कमजोरी हो गई है!

और इस हालत में मैं इन तीनों प्राणियों का एक साथ सामना नहीं कर सकता और ये तीनों अगर एक साथ मुझ पर हमला करेंगे, तो मुझे जरूर मार डालेंगे और इस कमजोरी की हालत में मैं बचाव तक नहीं कर पाऊंगा पर - पर ये तीनों 'जीवित मृत' प्राणी 'विष' की तलाश छोड़ कर एकाएक मुझ पर क्यों टूट पड़े? जहां तक मैं जानता हूं, अघूत ने इन्हें 'विष' की तलाश करने के लिए ही जीवन प्रदान किया था ओऽऽऽ। कुछ-कुछ समझ में आ रहा है ...
... जब-जब 'विष' ने या विष भरे पशुओं ने मुझ पर जहर मिश्रणों से हमला किया, तब-तब मेरे शरीर में उन 'जहर मिश्रणों' के खिलाफ मेरे शरीर की शिराओं ने प्रतिरोधक शक्ति पैदा कर ली यानी मेरे शरीर में भरा 'विष' का जहर मिश्रण नष्ट नहीं हुआ बल्कि उसने मेरे शरीर को नुकसान पहुंचाना बन्द कर दिया, अब इतनी तीव्र विष फुफकार छोड़ने के कारण मेरे शरीर में भरा जहर मिश्रण भी ऊपर आ गया है, और ये तीनों उसी जहर मिश्रण का आभास पाकर मुझ पर हमला कर रहे हैं! यानी ये मुझे ही 'विष' समझ रहे हैं।
अगर मैं ठीक समझ रहा हूं तो इनको रोकने का एक आसान सा तरीका है, मैं अपने शरीर में भरे 'विष' के जहर मिश्रण को इन तीनों पर छोड़ देता हूं, अब ये जहर मिश्रण इनके शरीर में जाते ही...

ये एक दूसरे को 'विष' समझने लगेंगे, और फिर आपस में ही लड़ने लगेंगे; ऐसे!
लेकिन तुम्हारे हमले ने मेरा काफी समय बरबाद कर दिया है। मुझे नागविष को ढूंढना होगा, क्योंकि अमृत अब किसी भी वक्त यहां पर पहुंच सकता है।
लेकिन तभी एक ख्याल दिमाग में कौंधते ही नागराज के कदम रुक गए—
नहीं, ऐसे नहीं। अब अमृत ... है तो स्वयं अमृत ... क्या काम करेगा ... चाहे ... परन्तु ... अमृत मेरा परलोक का टिकट कटा देगा
'विष' एक सुरक्षित गुफा में छुपी बैठी थी—
थोड़ी देर पहले तक मुझे वातावरण में अमृत लहरियों का आभास हो रहा था, अब वह आभास खत्म हो गया है। ... अमृत यहां पर आकर वापस ...
अमृत अभी तक तो नहीं आया है, पर जल्दी ही आना होगा
कौन? नागराज, तुमने मुझे कैसे ढूंढ लिया?
और 'विष' भी कम खतरनाक नहीं है ... एक दूसरे के दुश्मन ही सही, पर मेरे भी दोस्त नहीं हैं। मुझे अपनी रक्षा का इन्तजाम करने के बाद ही विष की तलाश में जाना चाहिए।
अपने जासूस सर्पों की मदद से। और जिन अमृत लहरियों का तुमको आभास हो रहा था...

... वे अद्भुत लहरियां उन मृत प्राणियों की थीं, जिनको अश्वराज ने चिता से उठाकर और कब्र से निकालकर जिन्दा किया था! और तुम्हारी तलाश में भेजा था, पर मैंने उनको तुम तक पहुंचने से रोक दिया.
अश्वराज के भेजे प्राणी? और वे यहां तक पहुंच गए यानी... यानी अश्वराज भी अब यहां आता ही होगा। और पृथ्वी के चौबीस घंटे पूरे होने में अभी भी थोड़ा सा समय बाकी है.
फिर वही चौबीस घंटे का समय. इस 'मृत्युलीला' का क्या चक्कर है?
अश्वराज भी चौबीस घंटे की बात कर रहा था!
यह जानकर अब क्या करोगे? पर तुम मुझे अश्वराज से क्यों बचाना चाहते हो? मैं तो तुम्हारी मित्र नहीं शत्रु हूं...
मुझे भी तुमसे कोई सहानुभूति नहीं है विष। मैं तुमको और अश्वराज को दूर-दूर रखकर सिर्फ उस विनाश को टालना चाहता हूं जो तुम्हारे और अश्वराज के टकराव से पैदा होगा।
विनाश? कैसा विनाश? मुझे बताओ...
नहीं... विनाश तो होगा ही विष ..
... तेरा विनाश. मैंने तुझे ढूंढ ही लिया, और तेरे द्वारा किए गए विनाश को भी निष्क्रिय कर दिया है. और वह भी पृथ्वी के चौबीस घंटे पूरे होने के पहले- पहले!
मैं जीत गया विष. और तू हार गई.
खेल की यह बाजी तेरे नाम रही.
पर तूने मुझे ढूंढा कैसे अश्वराज? तेरे खोजी प्राणियों को तो नागराज ने रोक दिया था न?

मैं उनके नहीं, नागराज के पीछे लगा था। यहां पर पहुंचते ही मुझे चट्टानों के बीच में से जाता हुआ नागराज नजर आ गया था! मैं समझ गया यह तुझे ही ढूंढने आया है। इसीलिए मैं इसके पीछे लग गया! इसके सर्पों ने इसको तुझ तक पहुंचाया, और इसने मुझको। बस!
यह करके तुमने नियम भंग कर दिया है अमृत! बेइमानी की है तुमने! नियमानुसार तुम सिर्फ अमृत प्राणियों के जरिए ही मुझे ढूंढ सकते थे। पर नागराज तुम्हारे अमृत द्वारा जीवित किया गया प्राणी नहीं है!
तुमने भी तो नागराज से जहर छीनकर अतिरिक्त जहर पाने की कोशिश की थी विष! और यह भी नियमों के विरुद्ध है। नियमानुसार किसी भी बाजी के बीच में हम अतिरिक्त शक्ति नहीं प्राप्त कर सकते!
तो फिर यह बाजी बिना जीत हार के खत्म करो!
न तुम जीते, न मैं हारी!
बाजी! यह क्या कोई खेल खेल रहे थे तुम दोनों?
हां, नागराज! हमारा ऊपर जीवन बहुत नीरस है। उस ऊब को दूर करने के लिए हम ये खेल खेलते हैं। किसी भी ग्रह पर चले जाते हैं! एक उस ग्रह पर विनाश फैलाता है, और दूसरा उस विनाश को फिर से अपने वास्तविक रूप में ले आता है!
विनाश करने वाला! विनाश करते-करते छिपता फिरता है, और विनाश को निष्क्रिय करने वाला निष्क्रिय करते-करते उसे ढूंढता है।
पर यह काम उसे एक खास समयअवधि में करना होता है!
अब उस समयावधि के दौरान विनाश फैलाने वाला 'विष' पकड़ा गया तो अमृत जीतेगा, वरना विष जीतेगा।
हम अपना किरदार भी बदलते रहते हैं। कभी ये 'अमृत' बनता है तो कभी मैं! वैसे भी विष और अमृत एक ही वस्तु के दो रूप हैं। ठीक वैसे ही जैसे जीवन और मृत्यु!

तुम ये सारा विनाश और पुनर्निर्माण सिर्फ एक खेल के लिए करते हो? लोगों को इतना कष्ट और इतनी मानसिक बरबादी सिर्फ अपनी जीत या हार के लिए देते हो!
अब क्या करें? और कोई रास्ता भी तो नहीं है! पर हमारे दांव मामूली नहीं होते! काफी कुछ दांव पर रखा होता है! जैसे इस बार का दांव है - यह पृथ्वी! जो जीतेगा वही इसका अभिभावक बनेगा! पर तूने तो जीत-हार का फैसला होने ही नहीं दिया...
पर हम बिना जीत-हार वाला खेल नहीं खेलते! इस खेल का तो फैसला होना ही होगा! और इसका निर्णायक बनेगा तू! अब तू जिसे चाहेगा, वही इस पृथ्वी का स्वामी बनेगा! हम तेरे दाएं अंग में अमृत और बाएं अंग में ज़हर भर दे रहे हैं!
फ्र्र्र्र्र्र्र्र
आऽऽऽऽह!
अब तू जिसे चाहे स्वीकार कर ले, और जिसे चाहे अस्वीकार! जिसे तू स्वीकार कर लेगा वही यह बाजी जीतेगा!
तू अब तक हमारे वारों से बचता आया है! ज़रूर तेरे शरीर में प्रतिरोधक शक्ति पैदा होती रही होगी। पर इस बार के मिश्रणों का प्रतिरोध कर सकने वाली शक्ति इस पूरे ब्रह्मांड में नहीं है!

ओऽऽऽह! मैं चुनूं तो किसको? जितना 'विष' खतरनाक है, उतना ही 'अमृत' खतरनाक है। पृथ्वी... ओऽऽऽह! पृथ्वी इन दोनों में से किसी के भी हाथों में सुरक्षित नहीं है। ओऽऽऽह! मेरे... होश गुम हो रहे हैं!
जल्दी सोच, नागराज! जल्दी! तेरे पास सिर्फ पांच पल और हैं! फिर या तो मेरा विष तुझे मार देगा या अमृत का अमृत! जल्दी सोच!
लेकिन नागराज पांच पलों तक यह निर्णय नहीं ले पाया–
और उसका तड़पता शरीर शांत पड़ गया–
यह तो मर गया! चलो, फिर से खेल शुरू करते हैं।
अब तो यह खतरा भी टल चुका है!
यह बताने के लिए धन्यवाद, विष और अमृत...
...मैं ऐसी ही किसी गुप्त बात के पता लगाने तक का इंतजार कर रहा था।
हां! यह था तो बहुत खतरनाक! मुझे तो कभी-कभी यह डर भी लग रहा था...
...कि अगर इसने हम दोनों की उंगलियां आपस में मिला दीं तो विपरीत शक्तियां मिलने से पैदा होने वाली ऊर्जा हमको अपने आप हमारे लोकों पर वापस भेज देगी!
नागराज! तू! तू... तू तो उधर मरा पड़ा है!
वह मैं नहीं, मेरी केंचुली है, जिसके अंदर भरी हुई मेरी सर्प सेना उसे मेरे मानसिक संकेतों के अनुसार चला फिरा रही है!
मैं तो गुफा की छत पर चिपका यह सारा घटनाक्रम देख रहा था!

खेल खेलना सिर्फ तुम दोनों ही नहीं, हम भी जानते हैं!
आह्ह! हम अपने ग्रह की तरफ वापस रवाना हो रहे हैं नागराज! तू हमारे साथ चाल चल गया! तेरी केंचुली का चलने के साथ-साथ बोलना भी हमको बेवकूफ बना गया! पर तेरी केंचुली बोल कैसे रही थी?
विष और अमृत चले तो गए थे, पर अपने पीछे कुछ सवाल भी छोड़ गए थे—
वह मेरी केंचुली नहीं, मैं ही बोल रहा था! हमारी पृथ्वी पर एक कला होती है, जिसको हम 'वेन्ट्रिलोक्विज़्म' कहते हैं! यानी आवाज 'फेंक' सकने की कला!
उसी कला का प्रयोग करके मैं ऐसे बोल रहा था ताकि मेरी आवाज मेरी दिशा से नहीं बल्कि मेरी केंचुली की तरफ से आती सुनाई दे!
अब पूछने का क्या फायदा है मूर्ख विष...
...अब तो हम वापस वहीं जा रहे हैं, जहां से आए थे। और नियमों के अनुसार अब हम पृथ्वी पे सौ सालों तक यहां नहीं आ सकते!
चलो! यानी पृथ्वी कम से कम अगले सौ सालों तक सुरक्षित है!
पर तब क्या होगा, जब पृथ्वी वाले विष और अमृत को भूल चुके होंगे, और सौ सालों के बाद वे वापस आएंगे!

समाप्त